देशी धातु-चयनिका

[इस परिशिष्ट में देशी धातुओं तथा आदेशप्राप्त धातुओं का चयन किया गया है। आगम, उनके व्याख्याग्रंथों तथा प्राकृत व्याकरण की धातुएं सप्रमाण एवं क्वचित् ससन्दर्भ संगृहीत हैं। त्रिविक्रम व्याकरण, पाइअसद्द-महण्णवो तथा कुछ अन्य प्राकृतग्रंथों से गृहीत धातुएं बिना प्रमाण के संकलित हैं। आदेशप्राप्त धातुओं के संस्कृत धातु रूप भी कोष्ठक में दे दिए गए हैं।]

अ

अइच्छ (गम्)—गमन करना (प्रा ४।१६२)।

अइच्छ (अति+क्रम्)—उल्लंघन करना (ओनि ५१८)।

अइमल्ह—धीमे चलना।

अई (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अंगुम (पूरय्)—पूरा करना (प्रा ४।१६६)।

अंगोहल—स्नान करना (व्यभा १० टी प ५२)।

अंच (कृष्)—१ खींचना (दश्रु ८।१०)। २ खेती करना। ३ रेखा करना (प्रा ४।१८७)।

अंच—झुकाना—'अंचेति त्ति वा णामेति त्ति वा एगट्ठं' (सूचू १ पृ २४०)।

अंछ (कृष्)—१ खींचना—'अंछंति वासुदेवं अगडतडम्मि ठियं संतं' (विभा ७९४)। २ लम्बा होना (विभा ७९५)।

अंछाव (कृष्)—खींचना—'अब्भंतरियं जवणियं अंछावेइ' (भ ११।१३८)।

अंछि—निकालना, आकर्षण करना (आवहाटी १ पृ १५१)।

अंबाड (तिरस्+कृ)—तिरस्कार करना (उसुटी प २)।

अंबाड (खरण्ट्)—लेप करना—'चमढेति खरण्टेति अंबाडेति त्ति वुत्तं भवति' (निचू ४)।

अकु—खाना—'अकु भक्षणे' (आचू पृ ३४४)।

अक्कुस (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org